इन्टरव्यू-२ स्थान-बजरडीहा

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम खतीजा बीबी है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 40 साल है।

प्र: चाचा जी तो बुनकारी का काम करते थे छोड़ दिए लेकिन आप नली मरने का काम करती है ?
ज: हाँ नली भरने का काम करती हुं।

प्र: और बूनकारी से जुड़ा कौन-कौन सा काम करती हैं ?
ज: सिलाई करते हैं, खाना वगैरह में देख भाल करते हैं लड़कन के साथ।

प्र: ये क्या हैं ?
ज: ये चरखा है, ये नटावा है नली भरने का ये चिरखी है हमारा काम यही नली भरना है। कभी-कभी तो गांव की आदमी का पूरी नहीं पड़ती है कभी-कभी काम मिल जाता है। कोई मेहनत मजदूरी कभी दुपट्टा में जाली भरने का काम आ गया। देखेंगी ।

प्र: हां ?
ज: हां एक बार आ गया तो कर लिए लड़किन सब सिलाई विलाई ना आवे तो। थोड़ा बहुत कोई देता है तो करते है। काम मिलता है कि नली भरनी है तो बिटिया कर देती है क्योंकि हमें तो कहीं मजुरी करने की भी फुरसत नहीं हैं। कभी-कभी बाहर का काम कर देते हैं।

प्र: अच्छा जो बाहर वाला काम आता है उसे उसकी कितनी कमाई होती है ?
ज: कमाई क्या 100-150 रुपया पहले चारो लड़किया कमा लेती थी। अब काम नहीं है। कभी आ गया तो एक लड़की स्कूल जाती है, 20 रुपये 15 रुपये हो जाती वो भी 15-20 दिनों में कोई काम मिला तो कर लिए। औरतों के लिए तो कोई काम नहीं है बस नली बनाईए ये घर का काम है खाली बैठे है तो कुछ कर लिए कोई खाना पका दिया कहीं बुलावा आया साल छ महीने में तो गये। उसके बाद भी टाईम है तो बैठे क्या करें।

प्र: तो ये काम तो आपका बहुत महत्त्वपूर्ण है ?
ज: हां बस यही काम है।

प्र: अगर से काम ना करे तो उधर का सब रुक जाएगा ?

ज: हां उधर का सब रुक जाएगा और जिसको भरने नहीं आता तो झकोर देता है।

प्र: अच्छा हर घर में औरतें से भरने का काम करती हैं ?
ज: हां जो खाली है वो भरती है जिसके यहां कोई नहीं है तो वे खरीदते है जिनके यहां कपड़ा पसारने वाली है जिनके यहां आराम है उन्हें कुछ करना ही नहीं पड़ता वे खरीदते हैं ना पैसा की कोई परेशानी है ना कोई काम है जिनके घर वहीं खरीदते हैं।

प्र: अच्छा ये नली भरने का काम भी बाहर से मिलता है या सिर्फ अपने घर की औरते करती हैं ?
ज: नहीं ये काम नहीं मिलता ये इसकी क्या मजूरी है मतलब ये कि 20-25 रुपये साड़ी की मजदूरी है तो वो उसे घर में ही कर लेती है बाहर कौन करायें।

प्र: शादी से पहले भी आपके यहाँ ये काम होता था ?
ज: जी हां

प्र: तभी से आप कर रह हैं और अब आपकी बेटीयां भी अब कर रही हैं, अगर से काम बंद हो जाए तो उधर टर्की भी बंद हो जायेंगी ?
ज: हाँ, यदि हम लोगों को कहीं जाना भी हो तो नहीं जा सकते कि नली कौन भरेगा।

प्र: तो मर्द लोग इसे समझते हैं कि आपका काम महत्त्वपूर्ण है ?
ज: काम क्या समझेंगे वो तो इसे औरतों को काम समझते हैं कहते हैं कि कामई करती हों यहाँ कोई काम नाम नहीं रहता है। रोना ही रोना है कौन सा 1000-1200 की काम कमा रही हो। इसे वो लोग कुछ नहीं समझते। कोई बाहर का मजदूरी भी करते तो लोग समझते कि हाँ कमाई करती है। हम बोल नहीं सकते हम जैसे कि भिखाड़ी है दे दिया ठिकरे। खाना कपड़ा ऐशो आराम जब दे दिया तो ठिक है। नहीं तो वही।

प्र: लेकिन यही काम बाहर करना होता तो बहुत पैसा देना पड़ता ?
ज: हाँ, लेकिन मजबूरी यही है कि घर में जब काम करना आता है तो बाहर कौन करायेगा।

प्र: नहीं हम इसलिए कह रहे कि उसके बाद भी महत्त्व नहीं समझा जाता है ?
ज: नहीं।